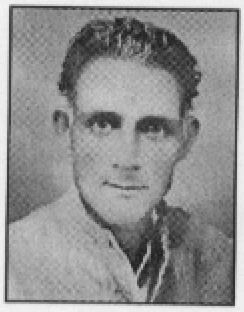

गजानन माधव मुक्तिबोध

आधुनिक हिन्दी कविता एवं समीक्षा के सर्वाधिक चर्चित व्यक्तित्व गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर 1917 को श्योपुर, ग्वालियर मध्यप्रदेश में हुआ था. उनके पिता माधव राव जी एक निर्भीक एवं दबंग व्यक्तित्व के पुलिस अधिकारी थे. माता जी श्रीमती पार्वती मुक्तिबोध हिन्दी वातावरण में पलीं एक समृद्ध परिवार की धार्मिक, स्वाभिमानी एवं भावुक महिला थीं. प्रेमचंद व हरिनारायण आप्टे के उपन्यासों में उनकी गहरी दिलचस्पी थी. 1939 में शांता जी से उन्होंने विवाह किया. नागपुर विश्वविद्यालय से 1953 में एम.ए.(हिन्दी) की उपाधि प्राप्त की.

मुक्तिबोध 20 वर्ष की उम्र से बड़नगर मिडिल स्कूल में मास्टरी प्रारंभ कर दौलतगंज (उज्जैन), शुजालपुर, इंदौर, कलकत्ता, बम्बई, बैंगलोर, वाराणसी, जबलपुर, नागपुर आदि स्थानों में कार्यरत रहे. अंततः दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगाँव में प्राध्यापक नियुक्त होकर अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ रचानाओं का उपहार हिन्दी जगत को दिया. अध्ययन-अध्यापन, लेखन व पत्रकारिता के साथ-साथ आकाशवाणी व राजनीति की व्यस्तता के बीच सतत संघर्ष व जुझारु व्यक्तित्व का परिचय देते हुए मुक्तिबोध ने आधुनिक हिन्दी कविता व समीक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी युग का सूत्रपात किया.

चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल (कविता संग्रह), सतह से उठता आदमी, काठ का सपना, विपात्र(कथा साहित्य), कामायनी एक पुनर्विचार, भारत : इतिहास और संस्कृति, समीक्षा की समस्याएँ, नये साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, आखिर रचना क्यों, नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा एक साहित्यिक की डायरी के अतिरिक्त छह खण्डों में प्रकाशित मुक्तिबोध रचनावली, मुक्तिबोध की लेखनी के तेज व प्रखर विचारधारा के जीवंत साक्ष्य हैं. लंबी बीमारी के बाद 11 सितम्बर 1964 को नई दिल्ली में उनका निधन हुआ.